भाजपा दलितों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के डा. अंबेडकर के मिशन को पूरा करेगी– लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा मुख्यालय में डा. अम्बेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्री लालकृष्ण आडवाणी

नई दिल्ली, 14 अप्रैल 2009! भारतीय संविधान के निर्माता देश के पहले कानून मंत्री भारतरत्न डा. भीमराव अंबेडकर के 118 वें जन्मदिन पर भाजपा के अनुसूचित जाति मोर्चा द्वारा पार्टी मुख्यालय नई दिल्ली में विशाल जनसमूह की उपस्थिति में एक भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने चुनाव प्रचार हेतु दलित चेतना रथ यात्रा को दिल्ली में हरी झंडी देकर रवाना किया और साथ ही भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''भाजपा की सकारात्मक व कांग्रेस की नकारात्मक सोचः कुछ तथ्य'' का भी लोकार्पण किया।

श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने कभी भी डा. अम्बेडकर के साथ न्याय नहीं किया। आज जिन डा. अम्बेडकर को हम संविधान निर्माता कहते हैं, यदि कांग्रेस के हाथ में ही सब कुछ होता तो शायद यह कभी भी संभव नहीं होता। संविधान सभा में कुल 290 सदस्य देशभर से रखे गये थे, उनमें डा. अम्बेडकर का नाम नहीं रखा गया था। तब पश्चिम बंगाल के किसी बुद्धिजीवी महापुरुष ने अपने स्थान पर डा. अम्बेडकर का नाम जुड़वाया था। डा. अम्बेडकर पहली बार प. बंगाल से चुनकर आए, यह हमारे लिए ऐतिहासिक महत्व का तथ्य है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री के प्रथम मंत्रिमंडल में यदि दो व्यक्ति डा. अम्बेडकर और डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी चयनित हुए तो वह उनकी प्रतिभा और योग्यता को देखते हुए नहीं बल्कि उनको मंत्री बनाने का श्रेय केवल महात्मा गांधी जी को जाता है। गांधी जी ने पं. नेहरू को समझाया था कि देश का पहला मंत्रिमंडल ऐसा होना चाहिए जिसे पूरा देश स्वीकार करे। इस प्रकार ये दोनों ही व्यक्ति ऐसे थे जो जीवनभर कांग्रेस के विरोधी रहे, डा. अंबेडकर ने तो कांग्रेसियों के बारे में उल्लेख भी किया है। डा. अंबेडकर ने कहा कि मैं हैरान था कि भारत का संविधान लिखने वालों की सूची में मैं भी हूं, मैं जब संविधान सभा में गया था तो मेरा ध्यान एक ही बात पर था कि भारत में मैं दलितों के अधिकारों की रक्षा और उनको सामाजिक न्याय दिलाने के लिए कोई ठोस योजना बनाऊं।

श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि हम सभी को ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी होनी चाहिए। 25 नवंबर 1949 को अपने संविधान प्रस्ताव समाप्ति भाषण में डा. अम्बेडकर ने कहा था कि संविधान ने देश और देश की जनता को राजनीतिक लोकतंत्र दिया है, यह पर्याप्त नहीं है, जब तक सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र प्राप्त नहीं हो जाता। हमारी आपसी फूट के कारण ही यहां विदेशी आए। बड़ी तपस्या और कुर्बानी से हमें आजादी मिली है इसे चिरस्थायी रखने के लिए हम सभी को एकजुट होकर प्रयास करना होगा। यह भाषण पढ़ने योग्य है, इससे पता लगता है कि अंबेडकर केवल दलित वर्ग की चिंता तक सीमित नहीं थे बल्कि महान देशभक्त और दूरद्रष्टा राष्ट्रपुरुष थे। 1952 में जब डा. अंबेडकर ने पहला चुनाव लड़ा तो मंत्रिमंडल के सदस्य और पहले विधिमंत्री होने के बाद कांग्रेस ने उनको योजनापूर्वक हरवाया, जीतने नहीं दिया। 1952 से कांग्रेस हमेशा सत्ता में रही लेकिन कहीं संविधान निर्माता के सम्मान या उनके विचार के प्रसार का प्रयास नहीं किया। फिर एक लंबी कालावधि के बाद 1990 में जब स्वर्गीय वी. पी. सिंह की सरकार हमारे समर्थन से बनी तो तब हमने न केवल दलित समाज अपितु संपूर्ण राष्ट्र के गौरव इस श्रेष्ठ महापुरुष को भारतरत्न के विशिष्ट गौरव से सम्मानित करवाया। केन्द्र में जब हमारी सरकार आयी तो समाज कल्याण मंत्रालय को हमने डा. अम्बेडकर के प्रिय शब्द के रूप में सामाजिक न्याय अधिकारिता

मंत्रालय का नाम किया। अनु. जाति व जनजातियों के साथ शताब्दियों से न्याय नहीं हुआ, हमने दोंनों मंत्रालयों को अलग–अलग कर विकास के स्वतंत्र आयाम दिए, हमारा चिंतन ऐसा है।

मुझे स्मरण आता है कि जब वर्ष 1952 में चुनावों के समय पार्टी के प्रदेश मंत्री के नाते मैं प्रवास पर था तो मैंने देखा कि आरक्षित सीट पर लड़ने वाला प्रत्याशी पार्टी के प्रदेश अधिकारियों के साथ ऊपर मंच पर ही नहीं बैठ रहा था। उस समय मुझे अपने गरीब व पिछड़े समाज का दर्द प्रत्यक्ष अनुभूत हुआ, हमने जनसंघ के कार्यकर्ताओं से कहा कि यहां ऐसा नहीं चलेगा, सभी के लिए संविधान ने एक समान अधिकार दिए हैं। उस समय देश की दशा व दिशा समझाने वाले कोई व्यक्ति थे तो वह दीनदयाल जी थे। जब सुनाई पड़ता था कि गरीब लोग केरल में प्रलोभन के कारण धर्मांतरित होकर ईसाई बन रहे हैं, तो दीनदयाल जी ने कहा था कि हम दोष ईसाइयों को क्यों दें, उनका तो वह काम ही है, दोष हम हिन्दुओं को ही देंगे। केरल में हर मकान के पीछे आंगन है और वहीं से सफाई करने वाला व्यक्ति अन्दर आता है। दलित आंगन से गुजरे उससे पहले दरवाजे पर एक कील में क्रास लटका रहता है, उसे पहनकर ही उस व्यक्ति का प्रवेश और सफाई का कार्य पूरा कर फिर उसे वह क्रास कील में टांगना होता है, तो स्वाभाविक है वह व्यक्ति भी यह सोचता है कि हर रोज के बजाय मैं क्यों नहीं इस क्रास को एक ही दिन गले में डालकर सभी जगह बे रोक–टोक आ जा सकूँ।

राजस्थान में उस समय जनसंघ से अधिक सशक्त रामराज्य पार्टी थी, कहा जा रहा था कि वह हमसे मिल जाएं लेकिन रामराज्य परिषद् छुआछूत की समर्थक थी और किसी भी धार्मिक स्थान में निम्नवर्ग के प्रवेश की विरोधी थी इसलिए जनसंघ ने उस पार्टी के विलय को अस्वीकार कर दिया। तो हमारी तो जनसंघ के समय से लेकर आज तक समाज के उपेक्षित, दलित और पिछड़े वर्ग के विकास के विषय में सकारात्मक सोच रही है। हमारे घोषणापत्र में साफ तौर पर कहा गया है कि आरक्षण के साथ–साथ अति पिछड़ों के कार्य कौशल को बढ़ावा देने के उद्‌देश्य से एक विकास बैंक स्थापित किया जाएगा। अर्थात् आरक्षण के हथियार के साथ–साथ जब विकास बैंक का संबल मिलेगा तो तभी डा. अंबेडकर के सपनों का सामाजिक न्याय सार्थक होगा।

भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित मोर्चा द्वारा चुनाव प्रचार में दलित रथयात्राओं को उपयोगी बताते हुए श्री आडवाणी ने कहा कि मैं दलित रथयात्रा कें संयोजक श्री रामनाथ कोविद सहित उनके सभी साथियों को बधाई देता हूं कि उन्होंने चुनाव से पहले इन रथों को देशभर में घुमाने की कल्पना की। हमने व्यापक जनसमर्थन व जागरण के कार्यक्रमों के लिए रथयात्रा को अपनाया है। क्योंकि जिस बात को जनता तक ले जाना है वह केवल प्रस्तावों और नारों से नहीं पहुंचेगी बल्कि उसके लिए घर–घर, गांव–गांव जाना होगा। आज सब ओर सारी दुनिया में भाजपा के घोषणापत्र की प्रशंसा हो रही है, आलोचना कर रही हैं तो केवल कांग्रेस, कांग्रेस वाले हमें आतंकवादियों से भी खराब मान रहे हैं। तालिबान अफगानिस्तान से पाकिस्तान में घुसते हुए हमारे लिए खतरा पैदा कर रहा है, इतनी गंभीर समस्या और ऐसे समय में आतंकवादियों से भी ज्यादा भाजपा से खतरा बताना शर्मनाक एवं दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा।

श्री आडवाणी ने अंत में सारे दलित समाज का आह्वान किया कि आज बाबा साहब अंबेडकर जयंती के पुण्य उत्सव पर आप सभी उनके संकल्प और स्वप्न को पूरा करने के लिए भाजपा को विजयी बनाएंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

दलित रथयात्रा के संयोजक पूर्व सांसद श्री रामनाथ कोविद ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी डा. अंबेडकर जयंती प्रतिवर्ष मनाती है और वर्ष 1997 से तो हम स्वयं लगकर पूरे उत्साह से सम्मान के द्योतक इस महापर्व को मना रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के विषय में चुनाव के दौरान व चुनाव की समाप्ति पर भी कांग्रेस व घटक दलों द्वारा यह दुष्प्रचार किया जाता है कि यह मनुवादी पार्टी है, वास्तव में यह हमारी पार्टी के बढ़ते प्रभाव को रोकने का षडयंत्र है। वर्ष 1999 में जब राजग सरकार थी तो तत्कालीन प्रधानमंत्री हमारे नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने लालकिले में एक भव्य अखिल भारतीय सम्मेलन में कहा था कि – हमारे खिलाफ इस देश में कुछ स्वार्थी तत्व यह दुष्प्रचार करते हैं कि हम मनुवादी हैं जबकि सत्य यह है कि हम मनुस्मृति नहीं भीमस्मृति के अनुसार चलते हैं अर्थात् डा. अम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान के अनुसार और समाज के दलित शोषित हिस्से के कायाकल्प का जो संकल्प डा. अंबेडकर का था, हम भी उसी को क्रियान्वित करेंगे।''

श्री कोविद ने आगे कहा कि कांग्रेस पार्टी ने लगातार 45 वर्ष तक देश पर राज किया लेकिन संविधान निर्माता डा. अंबेडकर की हमेशा अनदेखी और अवहेलना की । संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में डा. अम्बेडकर का एक तैलचित्र तक नहीं लगाया। 1989 में जब भाजपा द्वारा समर्थित वी.पी. सिंह की सरकार आयी, तब संसद भवन के अंदर डा. साहब का चित्र लगा और उसी समय डा. भीमराव अंबेडकर जी को भारतरत्न के सम्मान से मरणोपरांत विभूषित किया गया। इसी प्रकार डा. अम्बेडकर के जीवन की अंतिम घड़ी की साक्षी 26 अलीपुर रोड़ को कई वर्षों से राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की मांग चल रही थी, जिसे भाजपा के शिखर पुरुष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री रहते हुए वर्ष 2000 में पूर्ण किया, अटल बिहारी वाजपेयी जी के करकमलों से स्थापित डा. भीमराव अम्बेडकर मेमोरियल आज सबके सम्मुख है। यदि भारतीय जनता पार्टी आरक्षण विरोधी होती तो 26 जनवरी 2000 को जब केन्द्र सरकार के सम्मुख पंचायतों, विधानसभाओं व संसद में विद्यमान 10 वर्ष की आरक्षण अवधि समाप्ति का प्रस्ताव आया। तो भाजपा अथवा राजग सरकार ने उसे रद्द न कर और 10 वर्ष के लिए क्यों बढ़ा दिया। जबकि कांग्रेस का छल सबके सामने है उन्होंने निजी क्षेत्र में आरक्षण की बात अपने पिछले घोषणापत्र में कही थी। दलितों व गरीबों को 5 एकड़ तक मुफ्त सिंचाई सुविधा दिलाने की बात की थी, उसका क्या हुआ।

श्री कोविद ने कहा कि दलित समाज ने कांग्रेस सहित सभी छोटे–मोटे स्वार्थी दलों को देख लिया है जो केवल समाज को इस्तेमाल करते हैं। आज समय की मांग है कि पूरे देश में दलित समुदाय द्वारा इन रथों के माध्यम से भाजपा के पक्ष में वातावरण बनाकर श्री लालकृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री बनाया जाए तभी हमारे समाज का उद्धार होगा। आज इस अभियान में हमारे रथ– रायपुर, जयपुर, दिल्ली व लखनऊ में भाजपा की नीतियों के प्रचार में लगे हैं। उ.प्र. में स्वयं को दलित की बेटी बताने वाली मायावती ने वहां दलितों की आवाज पर रोक लगा रखी है और हमारे दलित चेतना रथ को शासन – प्रशासन की ओर से बार–बार बाधित किया जा रहा है। अंबेडकर का चस्पा लगाने वाले केवल व्यक्तिगत रोटियां सेक रहे हैं।

भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल ने कहा कि हिन्दुस्तान में एक बहुत लंबे कालखंड से सामाजिक कुरीतियां व्याप्त रहीं। बाबा साहब अंबेडकर को बाल्यकाल में ही ऊंच– नीच और छुआछूत का शिकार होना पड़ा। आज भी प्रश्न यही है जब हम सारे समाजों को साथ लेकर चलेंगे, तभी उत्थान होगा। भारतीय जनता पार्टी और डा. अंबेडकर की विचारधाराओं में परस्पर साम्य है, कांग्रेस तो केवल उनके नाम को भुनाती है। डा. अंबेडकर का मिशन और दृष्टि लगभग वही है जो पं. दीनदयाल जी की है, जिनकी मान्यता है कि जब तक समाज के एकदम अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति का विकास नहीं होता, तब तक सब व्यर्थ है। डा. अम्बेडकर और दीनदयाल जी के विचारों में पर्याप्त साम्य है। राजनीतिक कारणों से कांग्रेस और अन्य दलों में केवल डा. अंबेडकर का एक पक्ष रखा है जबकि उनके विचार व्यापक राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत हैं। धारा 370 और देश विभाजन के विषय में जो विचार डा. अंबेडकर के थे वही विचार डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी व पं. दीनदयाल जी के हैं। उनके मिशन और भाव को लेकर जो विकास करेगा क्योंकि कुछ करके दिखाने से ही भरोसा होता है, केवल बातें करके नहीं,

श्री रामलाल ने प्रमाण दिया कि जहां– जहां राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं, केवल दलित व पिछड़ों के ही नहीं बल्कि महिलाओं व समाज के अन्य वंचित वर्गों के लिए हमने ठोस कार्य किया है। हमारे घोषणापत्र में जो 2 रू. किलो चावल और गेहूं, बच्ची के जन्म के समय उसके नाम पर राशि जमा करने, पांचवी से स्नातक तक छात्रवृत्ति देने तथा लड़कियों के लिए साइकिल योजना, ये सभी चीजें सम्पन्न वर्ग के लिए नहीं बल्कि दलितों, कमजोरों और उपेक्षित लोगों के लिए हैं। दलित समाज छलावे में न आए, भाजपा को वोट देकर आडवाणी जी को प्रधानमंत्री बनाने में सहयोग करे।

भाजपा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश कोहली ने कहा कि 1891 में जन्मे डा. अंबेडकर 1956 में विदा हुए। इन 65 वर्षों में उन्होंने सतत् संघर्ष करते हुए सामाजिक क्रांति की एक मशाल जलाई। सदियों से भारतीय समाज में दोष व्याप्त रहे हैं उनसे लड़ना बड़े जीवट का विषय है। अस्पृश्यता का दोष समाज से दूर हो, बेशक लड़ाई लम्बी थी लेकिन वे संघर्ष करते हुए जीवन भर लड़े।

जब कोई महापुरुष किसी पावन ध्येय का संकल्प लेता है तो यह जरूरी नहीं कि उसके जीवनकाल में ही लक्ष्य की पूर्ति हो जाए, इसी प्रकार डा. अंबेडकर सामाजिक न्याय के काफिले को लेकर बढे और जीवन के अंत में उन्होंने अपने मानद् सचिव नानक चंद रत्तू से कहा था कि इस काफिले को पहले तो

आगे बढाना नही तो कम से कम रुकने मत देना। परिस्थितियां किसी को भी पस्त कर सकती हैं तोड़ सकती हैं किन्तु डा. अंबेडकर उनसे बाहर निकले, वे एक ध्येयवादी व्यक्ति थे, ध्येयवादी व्यक्ति जो भी करता है पूर्ण करने का प्रयास करता है। और कुछ जिम्मेदारी आगे के व्यक्तियों को देता है। डा. अंबेडकर को राजनैतिक और सामाजिक अवहेलना का शिकार होना पड़ा था, उनकी रचनाओं में कहीं– कहीं तीखापन देखा जा सकता है, लेकिन यह समाज के दोष को उभारने वाला है, इसमें समाज को बांटने की बात नहीं है।

श्री कोहली ने आगे कहा कि जब डा. अंबेडकर ने मुम्बई और भंडारा में लोकसभा चुनाव लड़ा तो कांग्रेस ने उन्हें हराने के लिए सब कुछ किया। पिछले 53 वर्षों से लगातार दलितों को इस्तेमाल किया, विवश होकर कई बार प्रलोभन देकर दलितों को धर्मांतरित भी किया गया। डा. अंबेडकर ने गोलमेज कांफ्रेंस में कहा था कि दलित समाज हिन्दू है। उन्होंने प्रोटेस्टेंट हिन्दू कहलाने की वकालत की थी। इस समाज को चेताने के लिए ही वे गौतम बुद्ध की करुणा की ओर गए। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी से डा. अंबेडकर ने दलितों व पीड़ितों के उद्धार की प्रेरणा ली। उन्हें बुद्ध की स्नेह सरिता में स्नान करवाया। डा. अम्बेडकर द्वारा संकल्पित कार्य बहुत लंबा है, जो अभी अधूरा है। उनके अधूरे सपने को पूर्ण करने का संकल्प भारतीय जनता पार्टी व उसके कार्यकर्ता लेते हैं।

राज्यसभा सांसद श्री नारायण सिंह केसरी ने कहा कि बाबा साहेब को गए 49 वर्ष हो गए हैं, अब वे वापस नहीं आएंगे। पिछले 60 वर्षों से हम सभी ने कांग्रेस सहित सभी राजनीतिक दलों की कथनी–करनी देख ली है। अब निष्कर्ष यह दिखाई पड़ रहा है कि केवल भारतीय जनता पार्टी ही ऐसा राजनीतिक दल है जो डा. अम्बेडकर के मिशन को पूरा करने में सक्षम है और उसके पास समर्थ कार्यकर्ता भी हैं। वाजपेयी जी के कार्यकाल में अभावग्रस्त समाज के लिए जो कार्य हुए वैसा ही आडवाणी जी भी करेंगे। छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान में जहां–जहां हमारा रथ गया है व्यापक जनसमर्थन व एकतरफा हवा भाजपा के पक्ष में दिखाई दे रही है। बाकी सारी पार्टियां दोगली हैं वे हमारे समाज का सौदा कर रही हैं। आज भाजपा को हमारी आवश्यकता है और हमें भाजपा की। दिल्ली की संसद में आने का रास्ता गांव से, हरिजन बस्ती से और आदिवासी क्षेत्रों से ही निकलता है। केन्द्र में आडवाणी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के माध्यम से ही हम डा. अंबेडकर के सपनों को पूरा कर सकते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता एवं भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश रतन ने कहा कि– डा. अंबेडकर केवल संविधान के ही नियंता नहीं थे बल्कि उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की भी पैरवी की, यह हिन्दू कोड विल से भी पता लग जाएगा। संविधान निर्माता डा. अंबेडकर की जन्मभूमि मऊ को छावनी बना दिया गया था, इसी तरह अंबेडकर के नाम पर कई लाइसेंसी दुकानें और दल चलाने वाले नेताओं को शर्म आनी चाहिए। बाबा साहब अंबेडकर के इतिहास के पन्ने लिखने नहीं बल्कि मिटाने का कार्य ऐसे लोग कर रहे हैं। भाजपा ने डा. विजय कुमार मल्होत्रा के समय जब दिल्ली में पहला खेल स्टेडियम बनवाया तो उसको डा. अम्बेडकर का नाम दिया, 26 अलीपुर रोड को राष्ट्रीय स्मारक बनाया और अब दिल्ली नगर निगम में जहांगीर पुरी का नाम बदलकर संत रविदास नगर रख दिया है तो फिर यह दलितों को और डा. अंबेडकर के अनुयायियों को फैसला करना है कि उनको सम्मान और प्रतिष्ठा कौन देगा– ये बाकी सभी कि भारतीय जनता पार्टी ?

पूर्व सांसद डा. अनिता आर्य ने कहा कि डा. साहब का एक स्वप्न था, उन्होंने मंत्र दिया था – शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो। तो शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है। संगठित भी हैं अब केवल संघर्ष की जरूरत है। अपने 60 साल के शासन में कांग्रेस ने दलितों को केवल इस्तेमाल किया, कभी उनकी आर्थिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता नहीं की। वोट की राजनीति के कारण आज भी अनुसूचित जाति वर्ग गरीबी और लाचारी में जी रहा है। आज भी यूपीए शासित राज्यों में छुआछूत जैसी व्याधि जारी है। वाजपेयी जी ने दलित समाज की चिंता की, आरक्षण का प्रावधान और दस साल बढाया तथा बैकलाग हेतु विशेष भर्ती अभियान के आदेश दिए। आज सोनिया गांधी और उनकी मंडली धर्मांतरित इसाइयों और मुसलमानों के आरक्षण की वकालत कर दलितों को वंचित कर रहे हैं। यह वास्तविकता है जो 60 साल तक हमारे समाज का भला नहीं कर सके वे अब क्या करेंगे। भाजपा के साथ जब हम आडवाणी जी को प्रधानमंत्री बनाएंगे तभी समरसता बढ़ेगी, परिवर्तन होगा और दलित वर्ग का भी उत्थान होगा।